विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

शिक्षा में प्रगति कौन चाहता है?

अभी हाल ही 11 जून 2023 को श्री मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय ऑडिटोरियम में न्यूरोसाइन्स और थियोलॉजी पर एक भव्य कार्यक्रम हुआ। हॉल खचाखच भरा था और बाहर भी अपार भीड़ थी। मुख्य आकर्षण तो ब्रह्मकुमारी शिवानी का व्याख्यान था ही। उदयपुर के प्रसिद्ध न्यूरोफिज़ीशियन डा.अतुलाभ वाजपेयी ने कार्यक्रम का परिचय दिया और यह भी दर्शाया कि योग प्राणायाम किस प्रकार मस्तिष्क को प्रभावित करते हैं और कई बीमारियों से किस प्रकार मुक्ति दिलाते हैं।

शिक्षाविदों और डॉक्टरों का एक पैनल भी बालकों के भविष्य को सुधारने के उपाय सुझा रहा था। शिवानी ने तो 'मैं' को सुधारने पर ही जोर दिया। मेरी अस्वस्थता के कारण मैं पेनलिस्ट में न जा सका। पर मेरे मन में यह प्रश्न उठ रहा है कि उपस्थित श्रोताओं में से ही नहीं, भारत की समस्त जनसंख्या में से कितने लोग शिक्षा में उन्नति चाहते हैं। कितने लोग यह चाहते हैं कि उनके बच्चे अच्छे बनें और कैसे बनें? यह तो शायद सभी चाहते हैं कि अच्छे बनें पर यह शायद अपवाद स्वरूप ही होगा कि वे अच्छे कैसे बनें?

सबसे पहले राजनेताओं को ही लेते हैं। क्या 75 वर्षों में किसी भी दल ने इस देश को शिक्षा में विश्वस्तर पर पहुँचाया है? नीति और आयोगों की भरमार रही पर उसके बावजूद ग्राफ गिरता ही रहा। उनका ध्यान सत्ता पर है शिक्षा पर नहीं। शिक्षा से उन्हें क्या मिलने वाला है। वे देश भक्त नहीं, सत्ता भक्त हैं, उन्होंने देश से गद्दारी की है। अब सामान्य नागरिकों को ही ले लीजिये। इनमें शिक्षक, इंजीनियर, डॉक्टर, मजदूर, किसान माता-पिता अभिभावक भी हैं। शिक्षक चाहे वह कहीं भी, किसी भी संस्था या संस्थान में शिक्षण कर रहा है शिक्षक ही है। क्या शिक्षक पूरी तरह विषय निष्णात है? क्या उसे अपने छात्र-छात्राओं से प्रेम है? क्या वह उनके भविष्य के बारे में सोचता है? इन अधकचरे शिक्षकों, संस्था प्रधानों, उपकुलपतियों के लिए कौन जिम्मेदार हैं? क्या ये भ्रष्ट व गद्दार सरकार ही इसके लिए जिम्मेदार नहीं है जो सिफारिश, भाईभतीजावाद व भ्रष्टाचार के कारण शिक्षा को बरबाद कर रही है। शिक्षक को विद्यार्थी के लिए रोल मॉडल कौन बनायेगा, सरकार प्रयास करती नहीं। केवल संस्थाएँ खोलने और वोट बटोरने से ही उसका मतलब है। तो फिर स्वयं शिक्षकों को और समस्त शैक्षिक संगठनों को ही सोचना होगा। पर वे तो केवल राजनीतिक लाभ, पदोन्नति, वेतनवृद्धि आदि की ही सोचते हैं, फिर विद्यार्थी की कौन सोचे?

आज छात्र-छात्राओं को, बालक-बालिकाओं को, युवाओं को समाज में, घर में, शिक्षा में रोल मॉडल का अभाव है। रोल मॉडल के अभाव में सभी भ्रमित हैं। निष्कर्ष यह कि जो जागरुक हैं, जिनमें 'मैं' को सुधारने की ललक है वे रोल मॉडल बनने का प्रयास करें। उन्हीं के कारण शिक्षा में प्रगति आ सकेगी।

जब मैं शिक्षक की बात करता हूँ तो उनमें सभी तरह के शिक्षक आ जाते हैं। क्या वे पूरी तरह ज्ञान देने में समर्थ हैं, फिर ज्ञान से तो काम चलता नहीं, कर्म भी तो करना पड़ेगा। भावनाएँ भी तो आवश्यक होंगी। क्या वे दिन-रात परिश्रम करके छात्र-छात्राओं को कर्म करना सिखा रहे हैं, क्या 'कर्म' से ही पूर्ति हो जायेगी? क्या सामान्य शिक्षकों और चिकित्सक शिक्षकों को छात्रों और रोगियों के प्रति पूर्ण सहानुभूति है, या केवल ट्यूशन और प्राइवेट प्रेक्टिस पर ही ध्यान है? अर्थ यह है कि शिक्षक भी रोल मॉडल नहीं।

अब सामान्य नागरिक की बात करें उनमें पढ़े-लिखे भी हैं और बिना पढ़े-लिखे भी। क्या वे जानते हैं कि बच्चे कैसे बने और क्या बनें? छोड़िये, न सही, पर क्या वे परिश्रमी हैं, ईमानदार हैं, विनयी हैं, शिष्ट हैं। सरकार तो उनको आलसी, कामचोर, मुफ्तखोर, झूठा और मक्कारपन सिखा रही है। ज्ञान नहीं भी हो तो इन गुणों से बालक आगे बढ़ जायेगा। पर सारा देश अनैतिकता और भ्रष्टाचार के कीचड़ में डूबा है (अपवादों की चर्चा मैं नहीं कर रहा हूँ।) यह देश संस्कारहीन बनता जा रहा है। विदेश की नकल करके अपनी अच्छी बातों को भूलता जा रहा है। प्रधानमंत्री जी की बड़ी-बड़ी बातें सही हो सकती हैं। भारत की राजनैतिक पूछ है, पर शिक्षा की बात वे कम ही करते हैं। 15 वर्ष तक एक राज्य का मुख्यमंत्री और 9 वर्ष तक प्रधानमंत्री रहने के बाद भी शिक्षा आज विश्व के न्यूनतम पायदान पर है। क्यों?

प्रधानमंत्री की शिक्षा के प्रति स्पष्ट रूचि का अभाव है। सेमिनार, कान्फ्रेन्स में सुनने वालों की भीड़ है पर असर तो विपरीत हो रहा है। कथा प्रवचनों की तो जैसे बाढ़ आ गयी है, परन्तु अनैतिकता तो बढ़ती ही जा रही है। क्यों?

क्या घरों में हर नागरिक 'मैं' पर ध्यान देता है, क्या वह ईमानदार व परिश्रमी है? क्या घर में स्नेह प्रेम का वातावरण है? क्या समाज में शिक्षण संस्थाओं तथा घरों में कहीं भी परिश्रमी एवं नैतिक गुणों को प्रोत्साहन है? आप ज्ञान न सही, परिश्रम करना सिखा दीजिये। घर का हर काम कराइये। समाज के लिए कुछ करने का जज़्बा जगाइये।

आप अपने जीवन में विनय, शिष्टता, ईमानदारी, स्नेह-प्रेम, अनुशासन सीखिये। अपना उदाहरण दीजिये। बच्चे सीख जायेंगे-सुधर जायेंगे, बन जायेंगे, देश को बना देंगे, आप इन राजनेताओं को भूल जाइये। शिक्षकों को भी हाल विस्मृत कर दीजिये। आप कल के 'मैं' पर ध्यान दीजिये। 'मैं' सुधर जायेगा हम सुधर जायेंगे। हम सुधर जायेंगे देश सुधर जायेगा। देश विश्व गुरू बनके रहेगा। ये राजनेता कुछ नहीं करेंगे और इनके कारण अधिकांश शिक्षक भी।

आज छात्र-छात्राओं को, बालक-बालिकाओं को, युवाओं को समाज में, घर में, शिक्षा में रोल मॉडल का अभाव है। रोल मॉडल के अभाव में सभी भ्रमित हैं। निष्कर्ष यह कि जो जागरुक हैं, जिनमें 'मैं' को सुधारने की ललक है वे रोल मॉडल बनने का प्रयास करें। उन्हीं के कारण शिक्षा में प्रगति आ सकेगी। महादेवी शिवानी का सपना भी साकार हो जायेगा।

जय भारत।

–अतिथि सम्पादक,
कैलाश विहारी वाजपेयी,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

राशिफल गुरूवार 29 जून, 2023

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2080, स्वाती नक्षत्र सांय 4:30 तक, सिद्ध योग रात्रि 3:43 तक, वणिज करण दिन 3:01 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-तुला, मंगल-कर्क, बुध-मिथुन, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज रवियोग सांय 4:30 तक है। आज भद्रा दिन 3:01 से रात्रि 2:43 तक रहेगी। आज देवशयनी एकादशी व्रत है। आज से चातुर्मास व्रत नियम आरम्भ होगा। आज ईद-उल-जुहा (बकरीद) है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: सूर्योदय से 7:22 तक, चर 10:48 से 12:30 तक, लाभ-अमृत 12:30 से 3:55 तक, शुभ 5:38 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:40, सूर्यास्त 7:21

मेष

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

धनु

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय के नवीन स्त्रोत सामने आयेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

वृष

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

कन्या

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

मकर

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मिथुन

व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति ठीक रहेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बढ़ेगा।

कुंभ

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

कर्क

घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

वृश्चिक

घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा।

मीन

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

"हर हाथ कलम" अभियान को समर्पित अध्यापक नरेश कुमार लोहार

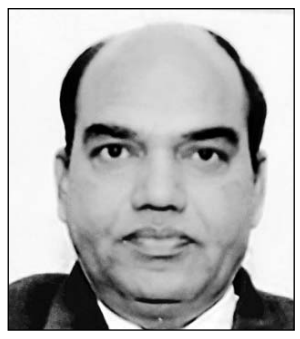

पन्नालाल मेघवाल

हर हाथ कलम अभियान को समर्पित अध्यापक नरेश कुमार लोहार ने उदयपुर संभाग के जनजाति क्षेत्रों में यह अभियान जोरों से चला रखा है। दमाणा (मगवास) में 9 सितंबर 1986 को जन्मे नरेश कुमार लोहार राजकीय प्राथमिक विद्यालय घाटाफला (गोदावाडा) में कार्यरत हैं। वे प्रकृति प्रेमी, पंछी मित्र एवं भामाशाह प्रेरक हैं। उन्हें श्रेष्ठ अध्यापन, पर्यावरण एवं समाज सेवा के लिए 15 अगस्त 2022 को उदयपुर जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा ने सम्मानित किया।

अध्यापक नरेश कुमार लोहार ने संभाग के जनजाति क्षेत्रों के विद्यार्थियों को विद्यालयों के प्रति आकर्षित करने, सरकारी विद्यालयों में नामांकन बढ़ाने, विद्यालयों में बालकों का ठहराव सुनिश्चित करने के उद्देश्य से विद्यार्थियों के नन्हे हाथों में कलम थमा कर शिक्षा के माध्यम से उनका चहुंमुखी विकास करने का बीड़ा उठाया है।

उन्होंने अंत्योदय फाउंडेशन, मुंबई के सहयोग से स्मार्ट क्लास रूम योजना के तहत बच्चों को तकनीकी शिक्षा के लिए जनजाति क्षेत्र के 28 विद्यालयों में एलईडी उपलब्ध कराए, जिससे 7 हजार 921 विद्यार्थी लाभान्वित हुए। उन्होंने स्मार्ट टॉय बैंक योजना के तहत 31 विद्यालयों में स्मार्ट शैक्षिक खिलौना सेट उपलब्ध कराए, जिससे 5 हजार 51 विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

अध्यापक नरेश कुमार लोहार ने स्टेशनरी बैंक योजना के माध्यम से 25 विद्यालयों में पेन, पेंसिल, कॉपियां, रजिस्टर, कलर, इरेज़र, शॉर्पनर इत्यादि वितरित करवाए, जिससे 2 हजार 274 विद्यार्थी लाभान्वित हुए। उन्होंने 12 विद्यालयों में स्कूल बैग, वाटर बॉटल, लंच बॉक्स, डेस्क वर्क, कैंपर इत्यादि वितरित करवाए, जिससे 606 विद्यार्थी लाभान्वित हुए। उन्होंने क्राफ्ट एंड सिलिकॉन फाउंडेशन, गुजरात के सहयोग से 6 विद्यालयों में स्टेशनरी किट, रजिस्टर, खिलौने, वॉटर बोटल, लंच बॉक्स, ट्रैक सूट, प्रोजेक्टर, बैग एवं दरियां वितरित करवाई, जिससे 318 विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

उन्होंने अंत्योदय फाउंडेशन, मुंबई के सहयोग से अभियान दिव्यांगम के माध्यम से 9 विद्यालयों के 11 विद्यार्थियों को व्हीलचेयर भेंट करवाई। उन्होंने अभियान जलम् के माध्यम से 7 विद्यालयों में पानी की टंकियां, कैंपर एवं वॉटर बोटल उपलब्ध कराई, जिससे 2 हजार 293 विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

अध्यापक नरेश कुमार लोहार ने हीरेन पंचाल, गुजरात के सहयोग से अभियान गुलाबी सर्दी के तहत 64 विद्यालयों एवं आंगनवाड़ी केंद्रों के 3 हजार 287 छात्रों को स्वेटर एवं ऊनी वस्त्र वितरित कराए। मिशन चरण कमल के तहत 27 विद्यालयों एवं आंगनवाड़ी केंद्रों के 1 हजार 200 बालक बालिकाओं को जूते एवं मोजे वितरित कर लाभान्वित किया।

उन्होंने अभियान वस्त्रम् के तहत शहरों से पुराने वस्त्र एकत्रित कर 10 हजार बालक-बालिकाओं एवं जरूरतमंद लोगों को वितरित किए गए। उन्होंने अभियान वृक्षम् के तहत विभिन्न विद्यालयों में ट्री गार्ड एवं पौधे उपलब्ध कराकर पर्यावरण सरंक्षण संबंधित कार्य किया। अभियान संबलम के तहत महिलाओं के लिए सिलाई केंद्र खुलवाएं, अभियान सहारा के तहत बुजुर्गों को वाकिंग स्टिक एवं वॉकर वितरित करवाए।

मिशन नवोदय के तहत नवोदय विद्यालय हेतु नि:शुल्क कोचिंग क्लासें ली। उन्होंने विभिन्न अभियान चलाकर बालक बालिकाओं को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा रूपी गंगा का अमृत पान कराने का भागीरथी प्रयास किया।

अध्यापक नरेश कुमार लोहार ने कोरोना काल में आयुर्वेदाचार्य की देखरेख में आयुर्वेदिक काढा वितरित करवाया एवं 20 हजार से अधिक मास्क वितरित करवाए। अपने स्वयं के कंधे पर सैनिटाइजर मशीन रख कर कई गांवो को सेनेटाइज करके लोगों को कोरोना से बचाव के लिए प्रेरित किया। उदयपुर संभाग के जनजाति क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों एवं आंगनबाड़ी केंद्रों के विद्यार्थियों एवं आम लोगों को उनके हर हाथ कलम अभियान से अच्छा खासा लाभ हुआ है। उनके समाज सेवा कार्यों की सर्वत्र सराहना की जा रही है।

–पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं
0स्वतंत्र पत्रकार

नेशनल हाईवे 158 का रिंग रोड एक वर्ष से विकास को तरस रहा है

आसीन्द, (निसं)। आसींद नगर से गुजर रहा नेशनल हाईवे 158 का रिंग रोड पिछले एक वर्ष से विकास को तरस रहा है। स्थानीय पार्षद अनिल सिंह तंवर ने बताया कि पिछले एक वर्ष आसीन्द नगर से गुजरने वाले ब्यावर-भीलवाड़ा मुख्य मार्ग पूरी तरह खस्ताहाल हो चुका है।

आए दिन राहगीर सड़क हादसे का शिकार हो रहे हैं। उक्त सड़क मार्ग पर गम्भीर दुर्घटना हो चुकी है। स्थानीय प्रशासन सुध नहीं ले रहा है।

- **प्रशासन की अनदेखी राहगीरों पर भारी, सैकड़ों हो चूके हैं हादसे का शिकार**
- **नगरवासियों पूर्व में भी खस्ताहाल सड़क को लेकर उच्च अधिकारियों को अवगत कराया था**

आसींद नगर से गुजर रहे नेशनल हाईवे 158 के रिंग रोड पर पर डामर के नाम पर केवल खड्डे बचे हैं।

सड़क पर डामर के नाम पर केवल खड्डे बचे हुए हैं। वर्तमान में बारिश के दौरान 1 से ढ़ेड फिट तक के खड्डों में पानी भर जाता है। जिससे कई सड़क दुर्घटना का शिकार हो रहे हैं। उक्त मार्ग पर प्रतिदिन हजारों की संख्या में भारी वाहन गुजरते हैं साथ ही नेशनल हाईवे का कार्य भी प्रगति पर होने से सैकड़ों की संख्या में रोजाना भारी वाहन भी गुजरते हैं जिससे भी सड़क को काफी क्षतिग्रस्त हो चुकी है। नगरवासियों पूर्व में भी खस्ताहाल सड़क को लेकर उच्च अधिकारियों को अवगत कराया तथा स्थानीय प्रशासन को ज्ञापन के द्वारा भी संज्ञान में लाया गया परन्तु आज दिन तक कोई समाधान नहीं हो पाया है इससे नगर वासियों में प्रशासन को लेकर काफी रोष व्याप्त है।

महावीर प्रसाद साहू ने बताया कि घर पर जाते समय बारिश का पानी भरा होने से खड्डे दिखे नहीं जिससे कहना है कि दुकान के बाहर बड़े-बड़े गड्ढे होने से आए दिन दुर्घटनाएं हो रही है जिससे आमजन को गंभीर रूप से घायल हो रहा है।

चन्द्र प्रकाश शर्मा दुकानदार का बाइक सहित में खड्डे में गिर गया और मेरा एक पैर टूट गया और शरीर पर कई चोटें आयीं।

अनिल सिंह तंवर पार्षद वार्ड नं. 22 के अनुसार आसीन्द खस्ताहाल सड़क निर्माण को लेकर पूर्व में नगरवासियों के सानिध्य में मैंने कई बार स्थानीय प्रशासन एवं जिला प्रशासन को ज्ञापन से इस बारे में अवगत कराया परंतु अभी तक समस्या का समाधान नहीं होने से आमजन में रोष है। आए दिन सड़क पर दुर्घटना होने से राहगीरों को परेशानी का सामना उठाना पड़ रहा है।

शोध सफलता से काजरी में खजूर की बम्पर पैदावार

जोधपुर, (कासं)। केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी) में खजूर में अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिकों द्वारा निरन्तर शोध कार्य किया जा रहा है और उसी का परिणाम है कि इस वर्ष प्रत्येक पेड़ पर 100 किलों से भी अधिक गुणवत्तापूर्ण फल प्राप्त हो रहे हैं। वर्ष 2015 में आनन्द कृषि विश्वविद्यालय, गुजरात द्वारा विकसित खजूर की किस्म एडीपी-1 के 150 टिश्यू कल्चर पौधे यहाँ लगाये गये थे। लगाने के तीसरे वर्ष में फल आना आरम्भ हो गये थे और चौथे पांचवें वर्ष तक 60 से 80 किलो तक फल प्राप्त होने लगे थे। खजूर में चूंकि नर एवं मादा पुष्प अलग-अलग पेड़ों पर आते है अत: कृत्रिम प्रागण एक आवश्यक क्रिया है जो कि प्रत्येक वर्ष करना अनिवार्य है। फरवरी के महीने में पुष्पण होने पर नर के पौधों से पराग लेकर मादा के फूलों में परागण किया जाता है। पराग को 4 डिग्री सेल्सियस तापमान पर भण्डारण करके अगले वर्ष भी परागण के लिए उपयोग में लिया जा सकता है।

- **वर्ष 2015 में आनन्द कृषि विश्वविद्यालय, गुजरात द्वारा विकसित खजूर की किस्म एडीपी-1 के 150 टिश्यू कल्चर पौधे लगाये थे**

प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अकथ सिंह ने बताया कि गुणवत्तापूर्ण फलों के उत्पादन के लिए फसल नियमन एवं गुच्छों का प्रबन्धन बहुत महत्वपूर्ण है। परागण का कार्य फूल खिलने से 36 से 48 घण्टे के भीतर कर देना चाहिए तथा सर्वोत्तम गुणवत्ता के लिए प्रति पेड़ केवल 12 से 15 गुच्छों को रख कर शेष को हटा देना चाहिए।

काजरी निदेशक डॉ. ओ. पी. यादव ने बताया कि खजूर की किस्म एडीपी-1 सफल रही है। यह शुष्क और अर्द्धशुष्क जलवायु की फसल है। इसकी विशेषता यह है कि फल बारिश आने से पहले ही पक जाते है। इनके परिणाम लगातार सकारात्मक रहे है। इसकी क्वालिटी भी सामान्य खजूर फल की अपेक्षा अच्छी और मीठी है।

काजरी निदेशक डॉ. ओ. पी. यादव ने बताया कि इसका रंग भी बहुत सुहावना लाल सूर्य है। खजूर की खेती के लिए किसानों को जागरूक किया जा रहा है। पश्चिमी राजस्थान की जलवायु इस खेती के लिए बेहतर है। इसकी खेती कर किसान अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। खजूर अरब देश का फल है। एक पौधा 50 से लेकर 300 लीटर तक पानी पी जाता है। यह पौधा 80 साल तक जीवीत रह सकता है।

खजूर में 3 हजार कैलोरी, उर्जा प्रति किलोग्राम होती है। खजूर में 44 फीसदी शर्करा, 4.4 से 11.5 फीसदी फाइबर, 15 प्रकार के मिनरल्स, ओलिक एसिड और 7 प्रकार के विटामिन पाए जाते है। काजरी में खजूर विक्रय हो रहा है। आम नागरिक इन्हें खरीद सकते हैं।

रेल के जनरल कोच के यात्रियों को 20 रुपए में खाना मिलेगा

जोधपुर, (कासं)। रेलवे अब अपने जनरल डिब्बों में यात्रा करने वाले यात्रियों को बीस रुपए में खाना उपलब्ध करवाएगा। इतना ही नहीं इन यात्रियों को प्लेटफॉर्म तीन रुपए में पैकेज्ड पेयजल की ग्लास भी उपलब्ध कराया जाएगा। रेलवे ने ट्रेनों के जनरल डिब्बों में यात्रा करने वाले यात्रियों की बुनियादी सुविधाओं में बड़ी वृद्धि करते हुए यह निर्णय लिया है, जिसे जल्द ही अमल में लाया जाएगा। नई व्यवस्था के तहत रेलवे स्टेशनों के प्लेटफॉर्म पर जनरल डिब्बों के यात्रियों की सुविधा के लिए प्लेटफॉर्म पर जनता खाना के काउंटर स्थापित किए जाएंगे। जहां से यात्री खाना व पीने का पानी खरीद कर सफर के दौरान खाने की सुविधा का लाभ सकेंगे।

- **इन यात्रियों को प्लेटफॉर्म तीन रुपए में पैकेज्ड पेयजल की ग्लास भी उपलब्ध कराया जाएगा**
- **यात्रियों की सुविधा के लिए प्लेटफॉर्म पर जनता खाना के काउंटर स्थापित किए जाएंगे**

डीआरएम पंकज कुमार सिंह ने बताया कि रेलवे बोर्ड से इस तरह की नई व्यवस्था करने के निर्देश प्राप्त हुए हैं। जिनकी पालना में जनरल डिब्बों के यात्रियों की बुनियादी सुविधाओं में वृद्धि की जाएगी। जिससे उनकी विशेषकर लंबी दूरी की यात्रा सुखद बन जाएगी।

सीनियर डीसीएम विकास खेड़ा ने इस संबंध में बताया कि रेलवे के जनरल डिब्बों के यात्रियों के लिए खाने और पीने के पानी की व्यवस्था करने के निर्देश मिलें हैं। उन्होंने बताया कि यात्रियों को सभी बुनियादी सुविधाएं आईआरटीसी के माध्यम से सुलभ करवाई जाएगी। रेलवे ने सभी रेलवे जोन के महाप्रबंधकों को ट्रेनों के ठहराव पर खाना, पेयजल और अनारक्षित डिब्बों के पास वेंडिंग ट्रॉली की व्यवस्था करने के निर्देश दिए हैं। इसके अलावा सेवा गुणवत्ता में सुधार के लिए नियत स्टेशनों पर सामान्य श्रेणी के डिब्बों की सफाई सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए गए हैं।

गर्मियों में ट्रेन यात्रियों की संख्या में भारी इजाफा होता है लेकिन कई जगह मूलभूत सुविधाओं का अभाव होता है, जिसके चलते रेलवे ने यह फैसला लिया है।